पुरुषोत्तम संगमयुग और परमात्म-शक्ति की अनुभूति – II

इस वर्ष हम सबने परमात्म शक्ति की अनुभूति विषय पर चिंतन कर यह अनुभूति सबको कराने का लक्ष्य रखा है ताकि कोई ऐसा नास्तिक न रहे जो परमात्मा के अस्तित्व और शक्ति को न जानता हो। इसलिए परमात्म शक्ति की अनुभूति के लिए ऐसे साधन और साधना का निर्माण करना पड़ेगा।

हम सब जानते हैं कि बिजली एक शक्ति है, इसकी खोज बीसवीं सदी में हुई और इसका श्रेय वैज्ञानिकों को जाता है। वैज्ञानिकों ने इस शक्ति का निर्माण कर इसके प्रयोग के साधन बनाए, फलस्वरूप, विभिन्न रूपों व साधनों द्वारा इस शक्ति को उपयोग में हम ले रहे हैं। गरीब हो या धनवान सबको बिजली की शक्ति की आवश्यकता है। पहले लालटेन के द्वारा मेहनत करने पर रोशनी मिलती थी। आज एक स्वीच दबाते हैं और रोशनी हो जाती है। रेडियो द्वारा हम संगीत की अनुभूति कर सकते हैं, टेलीविज़न द्वारा दृश्य और श्रव्य दोनों प्रकार की अनुभूति कर सकते हैं। बिजली की शक्ति द्वारा कंप्यूटर रूपी साधन का संचालन हो रहा है जो हर क्षेत्र में काम आ रहा है। पहले टेलीग्राम के द्वारा संदेशों की लेन-देन होती थी या पत्र लिखने पड़ते थे, आज ई-मेल और फोन द्वारा यह कार्य सहज हो गया है। पहले कैमरे में रोल डालकर फोटो लेते थे, आज मोबाइल या डिजिटल कैमरे द्वारा यह कार्य सहज हो गया है। सार यही है कि बिजली की शक्ति की अनुभूति विभिन्न साधनों के द्वारा आज सारे विश्व में हो रही है। विश्व आज एक छोटा-सा गाँव बन गया है। बिजली की शक्ति ने सभी स्थानों पर, सभी साधनों और व्यवहारों में भौतिक क्रांति लाई है।

हमें भी आध्यात्मिक वैज्ञानिक (Spiritual Scientist) के रूप में आध्यात्मिक क्रांति लानी है और सबको परमात्म शक्ति की अनुभूति करानी है ताकि सभी समझें कि जीवन का अंतिम लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति है। परमात्मा के सच्चे स्वरूप का ज्ञान हमें सबको देना पड़ेगा क्योंकि हरेक ने अपनी-अपनी समझ के मुताबिक परमात्मा कौन है, कैसा है, क्या करता है, कब आता है आदि के बारे में बताया है। कई सिद्धांतों में उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव जितनी दूरी है। इस सैद्धांतिक दूरी के कारण कई बार अनेक प्रकार के टकराव तथा युद्ध आदि हुए हैं और होते रहेंगे। परमात्मा रचयिता है और हम सब उसकी रचना हैं। यह स्वाभाविक है कि रचना कैसे की गई, यह सच्चाई रचना को मालूम नहीं हो सकती। वास्तविकता तो यह है कि रचयिता ही अपना सच्चा परिचय दे सकता है और बता सकता है कि रचना कैसे रची गई। रचयिता के द्वारा दिया गया ज्ञान ही वास्तविक यथार्थ ज्ञान होगा। यह इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की महानता है कि यहाँ परमात्मा स्वयं ही अपना परिचय देकर अपनी रचना के बारे में ज्ञान देते हैं। उसी के कारण, परमात्मा के बारे में विभिन्न मान्यता रखने वाले बहन-भाई भी ज्ञान लेकर, एकमत होकर इस दैवी परिवार के सदस्य बनते हैं।

परमात्मा के यथार्थ परिचय को समझने के लिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि परमात्मा

कौन है, उनके साथ हमारा क्या संबंध है, उनके गुण, शक्तियाँ, कर्त्तव्य क्या हैं और वे कर्त्तव्य कब करते हैं? अगर इन बातों का स्पष्टीकरण सबको हो जाए तो परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचान सकेंगे। इस विश्व विद्यालय में परमात्मा का यथार्थ परिचय सबको है ही फिर भी संक्षेप में इसको हम इस लेख में दोहरा रहे हैं। परमात्मा निराकार हैं, परमधाम निवासी हैं, वे ज्योतिस्वरूप हैं, सबके परमपिता, परमशिक्षक और परमसतगुरु हैं। हम सबके रचयिता हैं।

परमात्मा के साथ संबंध की अनुभूति कैसे हो, अब हम यह बताना चाहते हैं। हमें ज्ञान है कि हमारे सर्व संबंध एक पिता परमात्मा के साथ होने चाहिएँ क्योंकि ये संबंध ही शाश्वत हैं। देहधारियों के साथ संबंध हर जन्म में बदलते रहते हैं और अनेक प्रकार के सुख और दु:ख के कारण भी बनते हैं। परमात्मा दु:खहर्त्ता और सुखकर्त्ता हैं। वे हम सबके दु:ख दूर कर हमें सुख देते हैं। इसलिए हम सब एक ही पिता परमात्मा के साथ सर्व प्रकार के संबंध स्थापित करते हैं। संबंध से लौकिक दुनिया में सुख की प्राप्ति होती है। मिसाल के तौर पर, हमने अभी-अभी सुना कि भारत के पूर्व सरसेनापति जनरल मणिक शाह ने एक बार कहा था, भारत की बांग्लादेश पर विजय हुई, वो सुख अलग था। लेकिन, उनके घर में जब उनकी बेटी अपने बच्चे को लेकर आती और उस बच्चे के आगे जनरल मणिक घोड़ा बन जाते, वह नाती उनकी पीठ पर बैठ जाता, मणिक शाह जी घोड़े के मुआफ़िक़ दो हाथ और दो पैर टिकाकर चलते, उनका नाती उनकी मूँछें खींचकर चिल्लाता – चल घोड़े चल और जनरल मणिक शाह को बहुत सुख की अनुभूति होती थी। ऐसे सुख का अनुभव उनको बांग्लादेश पर विजय प्राप्त करने के समय भी नहीं हुआ था। ऐसे सुख का कारण है संबंध की अनुभूति। भक्ति मार्ग में भी मीरा ने गिरधर गोपाल से संबंध जोड़ अपने राज्य-भाग्य का त्याग किया, वह गोपाल के प्यार में गोपी बनकर नाच उठती थी। भजन में भी गाया, ''लोग कहें मीरा भई बावरी...'' अर्थात् दुनिया के दृष्टिकोण से बावरी परंतु प्रभु प्रेम में खोई हुई रहती थी। भक्त शिरोमणि के रूप में आज भी मीरा प्रसिद्ध है। पांडव गीता में भी अर्जुन ने परमात्मा के साथ संबंधों का सार सुनाया है। सिख धर्म में भी कहा गया है, ''तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुहरी कृपा ते सुख घनेरे।'' संबंध के द्वारा ही कोई भी व्यक्ति वर्से का हकदार बनता है। कानून भी संबंधों को स्वीकार करता है। यहाँ मैं अपना एक विशेष अनुभव संबंध के बारे में बताना चाहता हूँ। शायद कोई उसे मेरा अभिमान या पागलपन भी समझे।

हम सबको ज्ञान है कि परमात्मा के साथ हमारे सभी संबंध हैं। वो हमारे पिता और हम उनके बालक हैं। वे हमारे शिक्षक और हम उनके विद्यार्थी हैं। हम उनके शिष्य और वे हमारे सतगुरु हैं। परंतु जब हमने सुना कि संगमयुग में हम परमात्मा को अपना बालक भी बना सकते हैं अर्थात् संगमयुग में परमात्मा हमारा बालक और हम उनके पिता भी हैं। ऐसा विशेष उनके साथ संगमयुग का संबंध है। हम यह भी जानते हैं कि परमात्मा हम सबका साजन और हम उनकी सजनियाँ हैं। मेरे मन में संकल्प चला कि अगर परमात्मा पिता है और हम उनके बालक हैं तो साथ-साथ हम पिता और वे हमारे बालक भी हैं। इस प्रकार से उल्टा (reverse) संबंध भी है तो साजन और सजनी के संबंध में भी उल्टा संबंध हो अर्थात् हम साजन और वो हमारी सजनी हो। ऐसा क्यों नहीं? ऐसा संबंध स्थापित करने के लिए योग की अवस्था में मैं परमात्मा से रूहरिहान कर रहा था, तो परमात्मा ने मुझे जैसे कि रूह-रूहान में जवाब दिया कि वह भी हो सकता है परंतु एक बात आपको मंजूर हो तो वह हो सकेगा। तब

हमने कहा, ज़रूर। तब परमात्मा ने हमको बताया कि मेरे साथ जो भी संबंध होता है उस संबंध के आगे एक विशेष विशेषण (Adjective) होता है जैसे, मुझे सिर्फ पिता नहीं कहते, परमपिता कहते हैं। मुझे सिर्फ शिक्षक नहीं परंतु परमशिक्षक कहते हैं। मुझे सिर्फ गुरु नहीं अपितु सतगुरु कहते हैं। उसी प्रकार से इस संबंध के आगे विशेषण का एक शब्द डालूँ तो? हमने कहा, भले डालिए। तो परमात्मा ने बताया, जैसे कि कन्या शब्द के आगे विशेषण लगाने से सुकन्या कहते हैं, इससे कन्या शब्द का भाव बढ़ जाता है। ऐसे ही पति को वर कहते हैं, उसके आगे सु लगा दूँ तो यह आपको मंजूर है? सु लगाने से सुवर हो जाएगा। मैंने सोचा कि गुजराती सुवर शब्द का अर्थ सुवर जानवर (Pig) हो जाता है तो यह संबंध मैं कैसे मंजूर करूँ? तो बाबा ने कहा, फिर यह संबंध नहीं हो सकता, यदि आपको मंजूर नहीं है तो। इस प्रकार इस रमणीक ज्ञान के आधार पर संबंधों में रमणीकता का हम अनुभव कर सकते हैं। यह ईश्वरीय ज्ञान शुष्क ज्ञान नहीं है जिसके लिए घर-बार का त्याग करना पड़े। परंतु यह ज्ञान परिवारों के लिए है। इस ज्ञान के आधार पर हम परमात्मा के परिवार के सदस्य अर्थात् दैवी परिवार के सदस्य बन जाते हैं। हमारा यह दैवी परिवार का संबंध भारत सरकार के वित्त मंत्रालय ने भी स्वीकार किया है। इस विश्व विद्यालय के दैवी बंधारण (Divine Contribution) में एक बहुत सुंदर बात लिखी हुई है। हम सब जानते हैं कि सतयुग में हमारे 8 जन्म, त्रेतायुग में 12 जन्म, द्वापर युग में 21 जन्म और कलियुग में 42 जन्म होते हैं। इन सबका कुल योग 83 जन्म होता है और गाया हुआ है 84 जन्म। लेकिन 84वाँ जन्म कैसे होता है, वह इस दैवी-बधारण में समझाया हुआ है कि 83वें जन्म में हम सभी बहन-भाइयों के अपने-अपने मात-पिता हैं परंतु 84वें जन्म में हम सबके अलौकिक पिता ब्रह्मा बाबा, माता सरस्वती माँ हैं। उसी के आधार पर हम सब आपस में बहन-भाई हैं और एक पिता परमात्मा से संबंध होने से हम सब आपस में भाई-भाई हैं। इस 83वें जन्म के शरीर में हमारे 84वें जन्म का संबंध प्रस्थापित होता है। एक ही दैवी परिवार के सदस्य होने के नाते हम सबके बीच धर्मभेद, राष्ट्रीयता भेद, भाषा का भेद, वर्णभेद, रंगभेद, वर्गभेद आदि किसी भी प्रकार का भेद नहीं है। इस प्रकार से परमात्मा के साथ ही सर्वश्रेष्ठ संबंध के आधार पर इस दैवी परिवार की रचना हुई है। इसीलिए यह 84वां जन्म सर्वश्रेष्ठ जन्म है। मैं मानता हूँ कि Divine Contribution की शिक्षा अपने दैवी परिवार के सभी सदस्यों को मिलनी चाहिए। इस 84वें जन्म को विराट स्वरूप में चोटी का संबंध माना गया है।

इस विश्व विद्यालय के अंदर दूसरी महानता यह है कि हम निराकार परमात्मा के साथ साकार स्वरूप में मिल सकते हैं, उनकी मुरली सुन सकते हैं और पालना भी ले सकते हैं। परमात्मा के साथ साकार संबंध का अनुभव विश्व में अन्य किसी भी संप्रदाय या धर्म में नहीं हो सकता। निराकार परमात्मा से साकार स्वरूप में मिलकर उनके साथ सच्चा संबंध हम बच्चे ही प्रस्थापित कर सकते हैं। यही हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ वरदान है। परमात्मा के दिव्य अवतरण की अनुभूति जो हम यहाँ कर सकते हैं वो दुनिया में और कहाँ भी नहीं हो सकती। अत: ईश्वरीय संबंध के सच्चे सुख की अनुभूति हमें सबको करानी है। बातें तो बहुत हैं। परमात्मा के साथ शक्ति एवं संबंध के अनुभवों को एक किताब के रूप में लिखकर छपवाएँ तो अवश्य ही उसे पढ़ने वाले वैसे ही श्रेष्ठ अनुभव करने के लिए तत्पर होंगे। अब ऐसे साहित्य का निर्माण करना है। अगले लेख में परमात्मा के साथ संबंध के अलावा उनके गुणों, शक्तियों, कर्त्तव्यों और दिव्य अवतरण आदि के बारे में विचार करेंगे। ❑